IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

वर्तमान समाज पर स्मार्टफोन के प्रभाव का एक अध्ययन (रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

कुलदीप पटेल
शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म्र.प.)

शोध सारांशः

वर्तमान समाज सामाजिक संबंधों का न होकर सेलफोन अर्थात् मोबाईलफोन का जाल बन चुका है। इसकी उपयोगिता तथा प्रभाव का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सन् 2000 से आरम्भ होकर वर्तमान समय तक के मध्य भारत में सेलफोन का उपयोग समाज के उच्च तबकों से आरम्भ होकर निम्नतम तबकों तक, सरकारी – गैर–सरकारी संस्थानों में, बूढ़ों तथा बच्चों तक सभी में समान रूप से पर्याप्त प्रचलित हो चुका है। इस प्रसिद्धि, प्रचलन तथा प्रयोग ने सचलयंत्र यानि सेलफोन को जहां एक ओर समाज को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित किया है, वहीं दूसरी ओर यह समाज की चिन्ता का भी विषय बन गया है। आज भारत में लगभग 27 करोड़ मोबाइल फोन उपभोक्ता है। भारत के हर चौथे आदमी के पास मोबाइल फोन है। एक आंकलन के अनुसार भारत में हर घंटे 10 हजार मोबाइल सेट बिक रहें हैं। पिछले ही दिनों मोबाइल फोन उपभोक्ता की संख्या के लिहाज से भारत ने अमेरिका का पीछे छोड़ा है। अब सिर्फ चीन भारत से आगे है। भारत में औसतन एक परिवार में एक से ज्यादा मोबाइल फोन है। एक जमाना था जब मोबाइल फोन का मतलब सिर्फ इतना था कि इससे फोन किया और सुना जा सकता था हालाकि तब भी यह एक आश्चर्य की तरह था क्योंकि इसे हाथ में लेकर कहीं भी आ–जा सकते हैं।1 लेकिन अब मोबाइल फोन का उपयोग बदल गया है। अब सिर्फ फोन करने या सुनने का साधन नहीं बल्कि यह एक साथ कई इलेक्ट्रानिक्स गैजेटर्स का काम करता है।2 अंततः तात्पर्य यह हुआ कि जब हम किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक उपयोग करते हैं तो वह हमारे ऊपर प्रभाव भी अधिक डालता है। मोबाइल फोन का उपयोग भी चाहे कम करें या अधिक वह भी हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाव को यदि जानने की कोशिश करें तो समाज का हर वर्ग मोबाइल फोन के कारण तनाव महसूस करता है। कभी अनावश्यक एस.एम.एस. के कारण तो कभी असमय कॉल के कारण, क्योंकि हम हमेशा किसी भी सूचना के लिए तैयार नहीं हो सकते।

मुख्य शब्द :– मोबाईल/स्मार्टफोन, सामाजिक संबंध, मनोबैज्ञानिक प्रभाव, सूचनातंत्र।

प्रस्तावना

सूचना तंत्र विश्व की धुरी है। सम्पूर्ण विश्व सूचनाओं के इर्द–गिर्द ही मंडरा रहा है। सत्य एवं प्रमाणिक सूचनाएं ही किसी भी निजी प्रतिष्ठान अथवा सरकारी कार्यालय का आधार है। सूचनाओं का अपना एक विस्तृत क्षेत्र है। सूचनाओं की कोई एक सीमा नहीं है और इसके प्रकार भी असीम है इन सूचनाओं को प्रेषित करने एवं प्राप्त करने के लिए विभिन्न तकनीक एवं आधुनिक यंत्र अपनाएं जाते हैं, तभी हरित क्रांति औद्योगिक क्रांति के बाद सूचना क्रांति का उदय हुआ।

हमारे दैनिक जीवन में भी सूचनाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। सूचनाओं का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए नित नये उपयोग एवं प्रयत्न होते रहें हैं। डाक सेवा, टेलीफोन, रेडियों, टेलीविजन, रडार एवं उपग्रह आदि संचार प्राणाली इन्हीं प्रयत्नों का परिणाम है।4'' इस कड़ी में मोबाइल फोन का नाम आता है। वर्तमान समय मोबाइल क्रांति का समय है। मोबाइल फोन में सूचना का आदान–प्रदान ध्वनि के रूप में ही होता है। टेलीफोन तो किसी एक स्थान पर ही स्थित होता है,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

जबकि मोबाइल फोन को उसकी सीमा के अंतर्गत हम किसी भी स्थान पर ले जा सकते हैं। टेलीफोन में सूचनाएं तारों से प्रवाहित होती है। जबकि मोबाइल फोन में सूचनाएं अति सूक्ष्म ध्वनि तंरगों के रूप में वायु मंडल में प्रवाहित होती है।

वर्तमान में विज्ञान की सबसे बड़ी देन है मोबाइल फोन (चलित दूरभाष यंत्र) इस यंत्र ने मानव समाज को चाँद तक पहुँचा दिया है। सर्वप्रथम ग्राह्मवेल ने 1876 में टेलीफोन का अविष्कार किया जो एक वायरलेस से संबंधित था। टेलीफोन के द्वारा व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर बसे अपने परिजनों से बात कर सकता है, मगर यह सेवा किसी स्थान विशेष तक ही सीमित होता था, क्योंकि यह एक वायरलेस के माध्यम से कार्य करता था। आवश्यकता ऐसे यंत्र की हुई जो स्थान विशेष के दायरे से हट कर कार्य करें तब बेल लेबोरेटरीज के इंजीनियरों द्वारा मोबाइल फोन बेस स्टेशनों के लिए 1947 में सेल का अविष्कार किया गया और 1960 के दशक में बेल लेबोटरीज ने इसे आगे विकसित किया। द्वितीय विश्वयुद्ध और 1950 के दशक में सिविल सेवाओं के दौरान सेना में इस सेल का उपयोग किया गया जिसे रेगिनाल्ड केस्सेंडेन रेडियों टेलीफोन के रूप में प्रदर्शन किया । 10 जून 1969 में पहला वायरलेस फोन अमेरिका में 3449750 नं. पर जारी किया गया।

मोबाइल फोन के नकारात्मक प्रभाव को देखें तो यह सामाजिक संबंधों में दूरियाँ बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही है। दुःख हो या सुख व्यक्ति दो मिनट मोबाइल फोन से बात करके ही अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का इतिश्री कर देता है। माता–पिता एवं बच्चों से मोबाइल फोन का स्थान सुविधा के कारण उच्च हो गया है जो कि पारिवारिक दूरियाँ बढ़ाने में काफी हद तक पर्याप्त है। कार एवं मोटर साइकिल चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं। जिसके कारण पारिवारिक असंतुलन उत्पन्न हो रही है। मोबाइल फोन से भेजे जाने वाले एस.एम.एस.व्यक्ति के ऊपर मानसिक प्रभाव डालता है। यह एक लत के तौर पर देखा जाता है। कई बार इनकी वजह से दुर्घटना होने की खबरें भी आती है। दाम्पत्य जीवन में मोबाइल फोन पति–पत्नि के बीच किसी तीसरे का आभास दिलाता है। जिस कारण परिवार में कलह के साथ ही तलाक की स्थिति भी बनती है। नई पीढ़ी में संचार का यह साधन, अनेकों बुराइयों को जन्म दे रहा है। झूठ, चोरी, ब्लैकमेलिंग, अश्लील एस.एम.एस., अपहरण एवं अनैतिक आचरण सोचना व करना व्यक्ति के लिए आसान हो गया है।

मोबाइल फोन का आर्थिक प्रभाव भी समस्या का कारण है। बजट से अधिक खर्च मोबाइल फोन के कारण होने लगा है। बच्चों का जेब खर्च केवल मोबाइल फोन पर खर्च होने लगा है। मोबाइल फोन के उपयोग के सकारात्मक प्रभाव को देखें तो मोबाइल फोन ने व्यवसायिक क्रांति का रंग ही बदल दिया है। सुदूर गाँव से रोजगार एवं शिक्षा के लिए नगर आए बालक–बालिका समय–समय पर अपने परिजनों से बात कर सलाह ले सकते हैं। कामकाजी महिलाओं को घर एवं बाहर दोनों कार्य क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना आसान हो गया है। समय पूर्व सूचना प्राप्त हो जाने से समस्या के निराकरण एवं कार्य के संपादन में मदद मिलती है। समाज के उन्नति में मोबाइल फोन मददगार साबित हो रही है। इस प्रकार सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में मोबाइल फोन का अपना अलग महत्व है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

पूर्व साहित्य की समीक्षा से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पूर्व अनुसंधानों, पुस्तकों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसमें की एक शोधकर्ता को अपनी समस्या के परिकल्पनाओं का निर्माण करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता द्वारा किये गये पूर्व अध्ययन साहित्य का विवरण निम्नानुसार है –

मित्तल और कुमार (2000) ने मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव शोध कार्य करने के उपरांत उन्होंने पाया कि मोबाइल फोन कृषि सेवाओं के रूप में किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने में सहायक है। कृषि बाजार में मोबाइल फोन और नेटवर्क की बढ़ती

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

(पैठ) उपयोगी जानकारी एवं अवसर उपलब्ध कराने में सहायक है विशेष रूप से अधिक समृद्धि समय पर मूल्य की जानकारी मिलने से किसानों को लाभ एवं उत्पादन में वृद्धि भी होती है।

सैडी प्लांट (2001) ने मोबाइल फोन का सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मोबाइल फोनका उपयोग व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर अधिक प्रभाव डालता है। मोबाईल फोन सामाजिक संबंधों को अधिक मजबूत बनाने एवं संबंधों में नजदीकियाँ लाता हैं और व्यक्ति की निजी जीवन में हस्तेक्षप भी करता है।

अब्दुल्ला (2003) के अनुसार मोबाइल फोन का प्रभाव हमेशा मानव के लिए स्वास्थ्य निहितार्थ के मुद्दों के साथ ही जुड़ा हुआ है। मोबाइल विकिरण पर कैंसर विकसित होने का खतरा दोगुना हो सकता है, इसके इस्तेमाल से मस्तिष्क गतिविधि में वृद्धि, कान के आस–पास नसों को नुकसान हो सकता है। मोबाइल फोन से जैविक प्रभाव भी पड़ सकता है।

ब्रीतोलिनी (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि मोबाइल फोन ज्ञान और जानकारी के लिए महत्वपूर्ण घटक है, उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से कृषि विकास में तेजी और सुधार के साथ–साथ विपणन और वितरण में भी मोबाइल फोन का सबसे बड़ा योगदान है, हितधारकों के बीच बातचीत की लागत को कम करने तथा उत्पादन चर्क्र में किसानों को मदद भी प्राप्त होती है तथा बिक्री भी समय पर एवं सही कीमत तय होती है।

विल्सन, रोथमान (2012) ने अपने अध्ययन में बताया है कि मोबाइल फोन से दैनिक जीवन में व्यक्ति को मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण कार्य क्षमता प्रभावित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

यदि हम कोई कार्य करते हैं तो उस कार्य को करने के पीछे हमारा कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। शोध कार्य पूर्ण करने हेतु अध्ययन का उद्देश्य जानना आवश्यक है क्योंकि उद्देश्य ही समस्या के समाधान करने में शोधकर्ता की सहायता करता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययन विषय की प्रकृति के आधार पर निम्नखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–:

1. उत्तरदाताओं का सामान्य विवरण ज्ञात करना।
2. मोबाइल फोन धारकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।
3. मोबाइल फोन का दैनिक जीवन में उपयोगिता का अध्ययन करना।
4. मोबाइल फोन का सामाजिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. मोबाइल फोन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को ज्ञात करना।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान का आधार परिकल्पना ही होती है। वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना के अभाव में संभव नहीं है। परिकल्पना का तात्पर्य पूर्ण चिंतन से है अर्थात् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना होती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया हैरू–

1. रीवा नगर में सामाजिक तथा पारिवारिक संबंधों में मोबाईल अर्थात् सेलफोन का प्रभाव अत्यंत व्यापक तथा अंतरंग है।
2. मोबाईल अर्थात् सेलफोन रीवा नगर में समाज के सभी वर्गों में दैनिक जीवन का उपयोगी तथा अनिवार्य अंग है।
3. मोबाईल अर्थात् सेलफोन का प्रभाव रीवा नगर निगम क्षेत्र में समाज के सभी वर्गों में पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों के लिये विघटनकारी सिद्ध हो रहा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

उपसंहार–

वर्तमान समाज सामाजिक संबंधों का न होकर सेलफोन अर्थात् मोबाईल का जाल बन चुका है। इसकी उपयोगिता तथा प्रभाव का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सन् 2000 से आरम्भ होकर वर्तमान समय तक के मध्य भारत में सेलफोन का उपयोग समाज के उच्च तबकों से आरम्भ होकर निम्नतम तबकों तक, सरकारी – गैर–सरकारी संस्थानों में, बूढ़ों तथा बच्चों तक सभी में समान रूप से पर्याप्त प्रचलित हो चुका है। इस प्रसिद्धि, प्रचलन तथा प्रयोग ने मोबाईल यानि सेलफोन को जहां एक ओर समाज को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित किया है, वहीं दूसरी ओर यह समाज की चिन्ता का भी विषय बन गया है। इस चिन्ता का प्रमुख कारण सामन्य जन में सेलफोन का अत्यन्त तीव्रता से बढ़ता प्रयोग है। वर्तमान समाज में सेलफोन का प्रवेश हमारे निजी जीवन की अत्यन्त अंतरंगता में बहुत तेज़ी से हुआ है। इस कारण संबंधों को जोड़ने के स्थान पर यह संबंधों को तोड़ने का कारक भी बनने लगा है। इस विषय पर सम्पूर्ण विश्व में समाजशास्त्री समाज को जागरुक करने का प्रयास करने लगे हैं। पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों में दूरियां पैदा करने के साथ ही साथ यह युवा वर्ग में भ्रम तथा आत्ममुग्धता का कारण भी बन रहा है। बच्चों में यह एक तरफ जहां मनोरंजन के स्वस्थ साधनों के प्रयोग को कम करने का खतरा पैदा करता है, वहीं दूसरी ओर माता–पिता के साथ पर्याप्त समय न बिता पाने के कारण एकाकीपन के बोझ को भी बढ़ाता है।

इन मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों के अतिरिक्त शारीरिक स्वास्थ्य पर भी मोबाइल के अधिक प्रयोग के दुष्परिणाम देखने में आ रहे हैं। इसका अधिक मात्रा में साक्षात् उपयोग न करने वालों पर भी जगह–जगह लगे मोबाइल टावर की विकिरणों के कारण स्वास्थ्य पर कैन्सर जैसी गम्भीर बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। एक ताज़ा स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार कैन्सर का मुख्य कारण मोबाइल टावर से निकलने वाला विकिरण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कम्प्यूटर संचार सूचना, इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, अगस्त 2008, पृ. – 1.

[2]. कम्प्यूटर संचार सूचना, इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, अगस्त 2008, पृ. – 3.

[3]. गोयल हेमन्त कुमार, कम्प्यूटर शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, पृ. – 251.

[4]. सर विलियम , स्टुअर्ट (2008); मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव, संचार तकनीकी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, पृ. 32–42.

[5]. मित्तल और कुमार (2000); मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव एक, आर्थिक विश्लेषण साप्ताहिक शोध पत्र, कृषि आर्थिक रिसर्च, चंडीगढ़, पृ. 71–88.

[6]. अब्दुल्ला (2003); मोबाइल फोन के उपयोग का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान– के ए सी एस टी, पी ओ बॉक्सः साउदी अरब पृ.103

[7]. ब्रीतोलिनी (2004); संचार तकनीकी की जानकारी अनाज सुरक्षाके लिए, अंतराष्ट्रीय खाद्य पॉलिसी इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन, यू.एस.ए. पृ. 122

[8]. रोथमान विल्सन (2012); सेलफोन और तनाव, एक अध्ययन, एनए, जानपदिक रोग विज्ञान, न्यूयॉर्क, पृ. 303

[9]. Khan, Shabimullah (2011); Switching tendencies of Consumers of mobile Phone services in Madurai District.k~ Journal of Commerce 3(4) p.32-38

[10]. Matti , Haverila (2011); Mobile phone feature Preferences, customer satisfaction and repurchase intent among male users.k~ Australasian Marketing Journal 19(4) p.238-246.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

[11]. Plant, S.k~ (2012) On the Mobile: The eff~ects of Mobile Telephones on Social and Individual Life.k~ Motorola, London.k~ Available at.p.94.